समाजशास्त्र

BA Part II (H)
Paper - III

SOCIAL ANTHROPOLOGY

FROM -
Dr. Arun Kumar
Reader
Dept of Sociology
Sherghati College
SASARAM.

13/5/20

सामाजिक मानवशास्त्र का अन्य विज्ञान से सम्बन्ध
(Relation between Social Anthropology and other Science)

✸ - सामाजिक मानवशास्त्र तथा समाजशास्त्र - समाजशास्त्र और सामाजिक मानव शास्त्र का पारस्परिक सम्बन्ध इतना घनिष्ट है इनमे अन्तर करना बड़ा कठिन है दोनो ही 'समाज' का अध्ययन है और दोनो का अन्तिम लक्ष्य सामाजिक नियमो का प्रतिपादन करता है। जैसा पहले ही कहा जा चुका है आदिम मानव तथा उसका समाज - सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक तथा धार्मिक संस्थाएँ व्यवस्था या संगठन अत्यन्त सादे, सरल व छोटे होते है और इनका अध्ययन सामाजिक मानवशास्त्र का विशेष उद्देश्य है इन अध्ययनो से प्राप्त ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर ~~समाजशास्त्री~~ समाजशास्त्रियो की आधुनिक, जटिल एवम् विशाल समाजो को समझने और उनके विश्लेषण एवम् निरूपण मे अत्यधिक सहायता मिलती है।

अधिकांश मानवशास्त्री जिनका अध्ययन समाजशास्त्र है जिनकी अवधारणाए दोनो विषयो मे समान रूप से पढ़ी जाती है मानवशास्त्र के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाए हुए है। अगर यह कहा जाए कि समाजशास्त्र मे समाजशास्त्रियो से अधिक मानवशास्त्रियो का अध्ययन किया जाता है तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

कोचर - मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र को जुड़वा बहने कहते है।
लॉवल का कहना है कि विस्तृत अर्थ मे समाजशास्त्र एव मानवशास्त्र बिल्कुल समान और एक है।
रेडक्लिफ ब्राउन - मानशास्त्र को तुलनात्मक समाजशास्त्र कहते है फिर भी इन दोनो विषयो मे कुछ मूलभूत अन्तर है।
सर्वप्रथम अन्तर - विषय क्षेत्र के आधार पर है अर्थात मानवशास्त्र प्रमुखतः आदिम समाजो का तो समाजशास्त्र सभ्य समाजो का अध्ययन करता है।

- दूसरा मूलभूत अन्तर अध्ययन पद्धति को लेकर है मानवशास्त्र प्रमुखतः सहभागी अवलोकन को अधिक महत्व दिया है जबकि समाजशास्त्र मे निदर्शन, अनुसूचि, प्रश्नावली आदि पद्धतियो का अधिक प्रयोग होता है।

श्री दुर्खीम ने अपने विस्तृत अध्ययन और प्रमाणो द्वारा एक नये रूप मे समस्त सामाजिक घटनाओ का सामाजिक कारण ढूंढ निकाला और 'समाज' को इन घटनाओ की व्याख्या मे सर्वप्रथम स्थान प्रदान किया, अंग्रेज मानवशास्त्री, श्री श्री दुर्खीम की इन धारणाओ से अत्यन्त प्रभावित प्रतीत होते है जिनके कारण सामाजिक मानवशास्त्री अनेक अध्ययनो मे श्री दुर्खीम की समाजशास्त्रीय उपकल्पनाओ को काम मे लाया गया है। यद्यपि अमेरिका मे यह सम्बन्ध उतना आन्तरिक नही है तथापि मानवशास्त्र तथा समाज शास्त्र के बीच कोई ठोस विभाजन रेखा खींचने का संयत प्रयत्न नही किया गया — 2

X— सामाजिक मानवशास्त्र और मनोविज्ञान —

सामाजिक मानवशास्त्र को मनोविज्ञान से भी अति घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनोविज्ञान मानव स्वभाव व मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान है और मानव स्वभाव का प्रभाव उसके सामाजिक कार्यों पर अति गम्भीर रूप मे पड़ता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि समाज और संस्कृति का आधार मनोवैज्ञानिक है। दूसरे शब्दों मे मानव स्वभाव का सामाजिक अध्ययन किये बगैर समाज या सामाजिक सम्बन्ध तथा संस्थाओं चाहे वह आधुनिक हो या आदिम, का अध्ययन सम्भव नहीं है। सामाजिक मानवशास्त्र का सम्बन्ध मनोविज्ञान से सामाजिक मनोविज्ञान के साथ विकास मे और घनिष्ट हो गया है। सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों मे और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का मानव व्यवहार और व्यक्तित्व से सम्बन्धित सामाजिक व्यवस्थाओं या सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन करता है। सामाजिक मानवशास्त्र और सामाजिक मनोविज्ञान एक दूसरे के पूरक के रूप मे है। परन्तु सामाजिक मानवशास्त्र तथा मनोविज्ञान मे कुछ अन्तर है — मनोविज्ञान का केन्द्रीय विषय मानव की मानसिक प्रक्रियाएं और अनुभव है जबकि सामाजिक मानवशास्त्र, सामाजिक व्यवस्थाओं या संस्थाओं का अध्ययन है। प्रथम का सम्बन्ध व्यक्ति से है तो दूसरे का सम्पूर्ण समाज से।

इन दो विज्ञानों के दृष्टिकोण मे भी पर्याप्त भिन्नता है। मनोविज्ञान का दृष्टिकोण मूलरूप मे वैयक्तिक है क्योंकि वह प्रधानतया व्यक्तिगत मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है इसके विपरीत सामाजिक मानवशास्त्र का दृष्टिकोण सामाजिक है। क्योंकि इसके अन्तर्गत एक व्यक्ति के रूप मे किसी का भी अध्ययन नहीं किया जा सकता

X- सामाजिक मानवशास्त्र और इतिहास — इतिहास भूतकाल की विशिष्ट घटनाओं का वर्णन तथा उनके कार्य-कारण सम्बन्धों के विश्लेषण द्वारा मानव जीवन की धारा को समझने का प्रयत्न करते हैं। इससे सामाजिक मानवशास्त्रियों को उनके अध्ययन कार्यों मे पर्याप्त सहायता मिलती है। अतीत की इन मानवीय अन्तःक्रियाओं से परिचित कराना आधुनिक इतिहासकार का प्रमुख कार्य है जिसके कारण सामाजिक मानवशास्त्रियों को उनके अनुसन्धान कार्य के लिए अनेक उपयोगी उपकल्पनाएं मिलती रहती हैं

Scanned by TapScanner

दूसरी ओर सामाजिक मानवशास्त्री- आदिम समाजों की उत्पत्ति विकास आदि प्रक्रियाओं का भी अध्ययन करता है। जबकि इतिहासकार की भूतकाल की विशिष्ट घटनाओं के कार्य कारण सम्बन्धों का विश्लेषण करने तथा उन घटनाओं का मनुष्य जाति की कहानी में क्या महत्व है उसका मूल्यांकन करने में पर्याप्त सहायता मिलती है। फिर भी इन दो शास्त्रों का अध्ययन क्षेत्र- दृष्टिकोण तथा पद्धतियाँ पर्याप्त भिन्न हैं। इतिहास केवल अतीत के विशिष्ट घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन और उनके कार्य कारणों सम्बन्धों का विश्लेषण है। जबकि सामाजिक मानवशास्त्र सामाजिक व्यवस्था या संस्थाओं का अध्ययन है। दूसरे, इतिहास का सम्पर्क केवल भूतकाल की- घटनाओं से होता है जब सामाजिक मानवशास्त्र भूत और समकालीन दोनों ही प्रकार के समाजों का - अध्ययन है।

• उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि मानवशास्त्र के अध्ययन के रूप में सामाजिक मानवशास्त्र मानवी- शास्त्रीय विज्ञानों तथा सामाजिक विज्ञानों के अत्यन्त निकट होकर भी उनसे पृथक अस्तित्व रखता है। यह पृथक अस्तित्व सामाजिक मानवशास्त्र के विशिष्ट अध्ययन विषय तथा पद्धति के कारण है। फिर भी इन विज्ञानों के पारस्परिक आदान-प्रदान से आयोजित मानवीय अध्ययनों द्वारा हम मानव जीवन के यथार्थ को समझने का यत्न करते हैं सामाजिक तथा मानवीय विज्ञानों की सार्थकता भी इसी में है।

From—
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
(Bhoshan College)
SASARAM-

Scanned by TapScanner